दुर्ग मंडोर

इतिहासकारों का मानना है कि मारवाड़ की राजधानी मण्डोर के पुराने नाम मडोदरा, मण्डोवर और मांडव्यपुर-दुर्ग थे, जो ऋषि मांडव्य से लिए गए माने जाते हैं। यह स्थान गुप्त काल में भी निवासरत था इसकी मान्यता का आधार इस क्षेत्र में गुप्त लिपि का प्रयोग है। जोधपुर से लगभग 8 किमी दूर स्थित मण्डोर एक प्राचीन स्थल है। स्थानीय परंपराओं का कहना है कि मण्डोर पर सबसे पहले नागाओं का कब्ज़ा था, उसके बाद तिहारों, चाहमानों और दिल्ली के मुस्लिम सुल्तानों का कब्ज़ा था, जिनसे कालान्तर में इसे राठौड़ों ने छीन लिया था। स्थानीय परंपराओं के अनुसार, मण्डोर पर सबसे पहले नागाओं का कब्ज़ा था। यह जिस नदी के तट पर स्थित है, उसे नागाद्री कहा जाता है। इस स्थान के तालाब को नागकुंड या अहिसैला कहा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मण्डोर के प्रतिहारों ने नागभट्ट प्रथम और उसके उत्तराधिकारियों की संप्रभुता को मान्यता दे दी थी। राजा कक्क, जिन्हें एक महान योद्धा के रूप में वर्णित किया गया है, बंगाल के पाल राजा के खिलाफ उनके अभियान में नागभट्ट द्वितीय के साथ थे। कक्क के पुत्र बुका को एक स्वतंत्र शासक के रूप में वर्णित किया गया है। मण्डोर नाडोल के चाहमान शासकों के नियंत्रण में भी रहा। 1226 ई. में, थोड़े समय के लिए इल्तुतमिश ने इस पर कब्ज़ा कर लिया और बाद में लगभग 1405 ई. में राठौड़ राव चूंडा ने इसे छीन लिया। इस स्मारक को प्राचीन और ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थल और अवशेष (राष्ट्रीय महत्व की घोषणा) अधिनियम, 1951 (1951 का LXXI) के तहत राष्ट्रीय महत्व का केंद्रीय संरक्षित स्मारक घोषित किया गया है।

मन्दिर अवशेषों के दृश्य

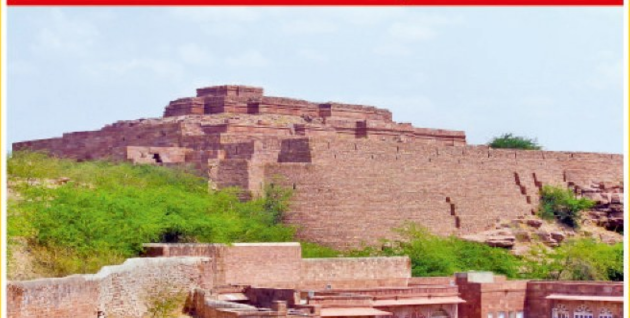

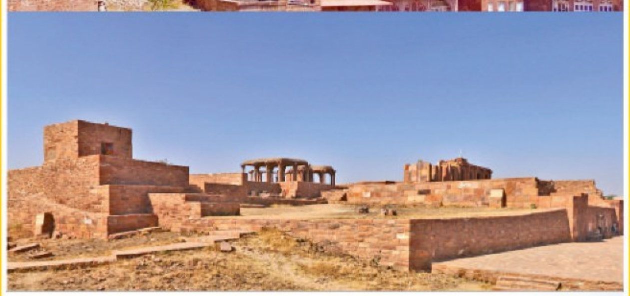

संरक्षण कार्यों की झलक

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जोधपुर मंडल नियमित आधार पर किले का सामान्य रखरखाव और संरक्षण कर रहा है। पुनर्स्थापना/मूल संरक्षण के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। मण्डोर में उत्खनन मण्डोर के प्रतिहार शासक कला के महान संरक्षक थे और उन्होंने अपनी राजधानी को कई खूबसूरत इमारतों से सजाया था। उनके शासन-काल के दौरान उत्कृष्ट ब्राम्हण और जैन मंदिरों का निर्माण किया गया। प्रतिहार शासक राजिल्ला ने किले की प्राचीर का निर्माण करवाया था। 1909-10 में की गई खुदाई में कृष्ण-लीला दृश्यों के दो विस्तृत नक्काशीदार एकाश्म पत्थर मिले हैं । खुदाई में मिले ब्रम्हा मंदिर में तीन ऊंची छतों वाला गर्भगृह है, जो ऊपर की ओर आकार में छोटा होता जाता है। मूल संरचना 7वीं- 8वीं सदी में बनाई गई थी और 9वीं-10वीं सदी के दौरान इसका जीर्णोद्धार किया गया था। छह स्तंभों वाले मुख अवशेषों को संगीतकारों के बैंड, कीर्तिमुख, अटलांटिस, पुष्प डिजाइन और अन्य रूपांकनों से विस्तृत रूप से सजाया गया है। खुदाई के दौरान खोजी गई कई मूर्तियों के अलावा, विष्णु के वामन-अवतार वाली एक मूर्ति विशेष रूचिकर है, जो दर्शाती है कि 9वीं-10वीं ई. में, इस मंदिर को विष्णु की पूजा के लिए समर्पित किया गया था।

दुर्ग में सबसे दिलचस्प वस्तुएं दो विस्तृत मूर्तिकला वाले एकाश्म पत्थर हैं। वे एक अच्छे तोरण के थे जो कर्नल टॉड के समय में बरकरार थे, जब उन्होंने इसका दौरा किया था। कृष्ण के जीवन के दृश्य जैसे गोवर्धन पर्वत को उठाना, मक्खन चुराना, गाड़ी पलटना और नाग कालिया को वश में करना, बहुत अच्छी तरह से चित्रित किया गया है।

डी. साहनी के अनुसार शैलीगत दृष्टि से ये स्तम्भ गुप्त काल के प्रतीत होते हैं। खुदाई के दौरान कुछ शिलालेख प्राप्त हुए हैं। 9वीं सदी के ऐसे अभिलेखों में से एक में केशव के एक उपासक ने अग्नि यज्ञ किया था। यहाँ का प्रतिहार शासक कक्कुक जैन धर्म का महान संरक्षक था। नाहदा राव की गुफा के उत्तर में अवस्थित जैन मंदिर, एक दो मंजिला संरचना है जिसमें तीन तरफ छोटी-छोटी कोठरियाँ बनी हुई हैं। मंदिर के सामने सभामंडप के स्तंभ पुराने हैं, जो 10वीं ई. के हैं।

निवेदन

1. देश की विरासत का संरक्षण प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी है, इसे भावी पीढ़ी के लिए संजोकर रखें।
2. कृपया स्मारक की प्राचीर पर न चलें।
3. कृपया स्मारक में कूड़ा-कचरा न फेंकें।
4. कृपया बंदरों को खाना न खिलाएं।
5. देश की अमूल्य विरासत पर गौरवान्वित महसूस करें ।

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल

1. मंडोर गार्डन
2. मेहरानगढ़ किला
3. छीतर महल या उम्मेद भवन
4. घंटाघर
5. कायलाना झील
6. जसवन्त थड़ा
7. सरदार स्मंद झील और महल
8. महामंदिर, एक पवित्र स्थान
9. माचिया जैविक उद्यान

अवधारणा एवं निर्देशन : डॉ. बीरी सिंह, अधीक्षण पुरातत्त्वविद्ध
आलेख प्रस्तुतीकरण : रामनिवास मेघवाल, सहायक पुरातत्त्वविद्ध

"आतो सुरगां नै सरमावै, ई पर देव रमण नै आवै,
ई रो जस नर नारी गावै,धरती धोरां री !"
– कन्हैया लाल सेठिया

सत्यमेव जयते

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

मण्डोर दुर्ग

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्
भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
जोधपुर मण्डल, जोधपुर
सम्पर्क सूत्र : 0291–2750029, 2750032

(2025)

हमारी विरासत......................हमारा गौरव